Theme: Pedagogical Leadership for Enhancing Student Learning Competencies

Shri Rajesh Kumar Dwivedi
Head Master
Middle School Ishopur
Phulwarisharif, Patna, Bihar
Email id: rajeshakshat2013@gmail.com; drajesh620@gmail.com
Mobile no.: 7488173051; 9304341987

Case Study Pedagogical Leadership for Enhancing Student Learning Competencies

मैं प्रधानाध्यापक के पद पर सितम्बर 2023 में मध्य विद्यालय इषोपुर, फुलवारी शरीफ, पटना में पदस्थापित हुआ। विद्यालय की स्थापना का 73 वर्ष हो चुका था, 73 वर्षों के उपरांत भी विद्यालय में आधारभूत संरचना का नहीं होना, एक समस्या नहीं बल्कि एक आपदा थी। इससे भी बड़ी आपदा यह थी कि ‟जांमविसकमते का विद्यालय से विष्वास पूरी तरह से उठ चुका था और निराषा का माहौल था। इन दोनों विषम परिस्थितियों से संघर्ष कर एवम् आपदा में अवसर की तलाष करते हुए एक ओर विद्यालय के आधारभूत संरचना का सृजन किया एवम् दूसरी ओर ‟जांमीवसकमते से अलग–अलग बातचीत कर उनकी समस्याओं को सुनकर उसका निराकरण किया तथा उनका विद्यालय के प्रति विष्वास पुनः वापस लाया। इस संघर्ष में मुझे 5–6 महीने लगे। पदस्थापना के उपरांत ही मेरे समक्ष विद्यालय में कई समस्याएँ और चुनौतियाँ विद्यमान थी। समाज में आमतौर पर लोगों में सरकारी विद्यालय के बारे में एक अवधारणा व्याप्त है कि एक सरकारी विद्यालय में शैक्षणिक वातावरण का पूर्णतः अभाव पाया जाता है, कहीं न कहीं इस अवधारणा को मैंने विद्यालय में सत्य के रुप में पाया। विद्यालय को सुव्यवस्थित ढंग से संचालित करने तथा बच्चों के लिए शैक्षणिक माहौल का निमार्ण करने हेतु मुझे कई निम्न समस्याओं और चुनौतियों का निराकरण करना था :

1. विद्यालय भवन, जो शैक्षणिक संस्थान का एक अति महत्वपूर्ण बाहरी आवरण है। बच्चे जिस भवन को देख आकर्षित होकर विद्यालय आने के लिए उत्साहित हों, म0 वि0 इषोपुर के भवन की स्थिति सही नहीं थी। विद्यालय आधारभूत सुविधाओं से वंचित था, यथा– चाहरदीवारी का नहीं होना, विद्यालय के कार्यालय सहित कई कमरों का जर्जर एवम् क्षतिग्रस्त होना, एक–दो कमरो में कबाड़ का अंबार लगा होना, विद्यालय परिसर का गंदा हो, अर्थात विद्यालय की भौतिक संरचना बच्चों के शैक्षणिक दृष्टिकोण से प्रभावी नहीं थी।

2. विद्यालय परिसर का तल काफी नीचे होने के कारण जल–जमाव की समस्या थी। षिक्षकों एवम् बच्चों को वर्ग–कक्ष तक आने–जाने में काफी परेषानी होती थी।

3. वर्ग–कक्ष में बच्चों के बैठने की व्यवस्था के अभाव में बच्चे जमीन पर बैठते थे, जिसके कारण उनमें निजी विद्यालय को देखकर हीनभावना उत्पन्न होती थी। कुछ 15–20 टूटे–फूटे बेच–डेस्क ही विद्यालय में थे। वर्ग–कक्ष का फर्ष टूटा–फूटा था, साथ ही वर्ग–कक्ष में पर्याप्त पंखों और लाइट का भी अभाव पाया गया।

4. विद्यालय में बेसिक सुविधाओं यथा– शौचालय, पेयजल, भ्ंदकॅूी ठेंपद की व्यवस्था नाममात्र थी। शौचालय उपयोग के लायक नहीं था। पेयजल की व्यवस्था के नाम पर चापाकल था, किन्तु क्रियाषील नहीं था। भ्ंदकॅूी ठेंपद में सारे नल टूटे हुए थे। ऐसी स्थिति में छात्र/छात्राओं को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था तथा उनके स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा था।

5. बच्चों के खेल एवम् अन्य गतिविधियों के लिए खेल का मैदान विद्यालय का अहम हिस्सा है। म0 वि0 इषोपुर में एक छोटा–सा खेल का मैदान है, जिसकी जमीन समतल नहीं होने के कारण उपयोगी नहीं थी।

6. ष्ब्ज्ण् स्ंइ होने के बावजूद उसका रख–रखाव सही ढंग से नहीं था। कम्प्यूटर की कक्षाओं का संचालन नहीं किया जा रहा था। सरकार द्वारा विद्यालय में कुछ पुस्तकें उपलब्ध करायी गयी थी, किन्तु बच्चों के लिए विद्यालय में ठववा ठंदा या स्पइतंतल की व्यवस्था नहीं थी।

7. विद्यालय की चाहरदीवारी की पर्याप्त ऊँचाई तक थ्मदबपदह नहीं होने के अभाव में कई असामाजिक तत्वों द्वारा विद्यालय बंद होने पर विद्यालय को क्षति पहुँचाया जाता था।

8. एक सरकारी विद्यालय में बच्चों का नामांकन एवम् बच्चों को विद्यालय आने के लिए प्रेरित करना एक बड़ी चुनौती है। विद्यालय में बच्चों का नामांकन था, लेकिन उनका नियमित रुप से उपस्थिति एवम् ठहराव संतोषजनक नहीं था।

9. ग्रामीणों एवम् विद्यालय षिक्षा समिति की सहभागिता नगण्य थी। षिक्षक–अभिभावक गोष्ठि में अभिभावकों की रुचि नहीं होने के कारण बच्चों की प्रगति एक बहुत बड़ी मुद्‌दा थी।

10. बच्चों के शैक्षणिक एवम् व्यक्तित्व विकास की दृष्टिकोण से विद्यालय में कोई सुविधा उपलब्ध नहीं थी। विद्यालय सिर्फ एक ढॉचा की तरह खड़ा था, जिसमें अनेक सुधार की आवष्यकता थी।

उपर्युक्त समस्याओं और चुनौतियों को क्रमबद्ध कर इसके निराकरण हेतु रणनीति तैयार किया और प्राथमिकता देते हुए निम्न रुप से समस्याओं का निदान किया :

1. सर्वप्रथम मैंने षिक्षकों, बच्चों, अभिभावकों एवम् विद्यालय षिक्षा समिति साथ बैठक कर समस्याओं पर विचार–विमर्ष कर निराकरण का रास्ता तैयार किया। विभागीय पदाधिकारी को विद्यालय की स्थिति से अवगत कराया गया। विभागीय पदाधिकारी द्वारा मेरा मनोबल बढ़ाया गया तथा विद्यालय सुधार हेतु सहायता प्रदान की गयी।

2. विद्यालय भवन एवम् वर्ग–कक्ष को आकर्षक एवम् बाल–केंद्रित बनाने हेतु मरम्मत तथा बाला पेटिंग से विद्यालय को जीवंत किया। प्रत्येक वर्ग–कक्ष में बच्चों को बैठने के लिए पर्याप्त मात्रा में बेंच–डेस्क की व्यवस्था की गयी।

3. बेसिक सुविधाएँ यथा–शौचालय, न्तपदंस, भ्दकूो ँजंजपवद, पेयजल आदि को कियाषील अवस्था में लाया गया।

प्उचंबज

अभिभावकों एवं बच्चों का विद्यालय के प्रति आत्मविष्वास का सृजन हुआ तथा विद्यालय में षैक्षणिक वातावरण का निर्माण हुआ। विद्यालय में बच्चों के नामांकन के लिए मैं एक नए प्रयोग को करते हुए पोषक क्षेत्र में हर घर के दरवाजे तक नामांकन प्रचार गाड़ी के द्वारा लोगों को जागृत किया तथ साथ ही व्द ँचवज ।कउपेपवद किया गया, जिससे हमारे विद्यालय में तीन गुना नामांकन की वृद्धि हुई। इस सफलता का मुख्य कारण था कि ग्रामीणों का विष्वास और सोच विद्यालय के प्रति सकारात्मक होने लगा था। दूसरा एक बड़ा प्रभाव बच्चों का विद्यालय में ठहराव, जहाँ वर्ष 2023–2024 में मात्र 410 बच्चों में मात्र 94 बच्चे 75ः उपस्थिति वाली संख्या में थें, वही आज वर्ष 2024–2025 में 374 में 214 बच्चे 75ः उपस्थिति वाली संख्या में है, जो स्पष्ट करता है कि विद्यालय में आधारभूत सुविधाओं के सृजन से और सुव्यवस्थित षिक्षण प्रणाली जो कि बाल केंद्रित था, बच्चों का विद्यालय में ठहराव सुनिष्चित हुआ।

नामांकन में वृद्धि		**75ः उपस्थिति वाले बच्चों की संख्या में वृद्धि ;।च्ैम्द्ध**	
वित्तीय वर्ष	**संख्या**	**वित्तीय वर्ष**	**संख्या**
2023–2024	**33**	**2023–2024**	**94 / 410**
2024–2025	**105**	**2024–2025**	**214 / 374**

1. विद्यालय में सषक्त चेतना सत्र का आयोजन किया जाता है। चेतना सत्र में निर्धारित चर्या के अनुसार प्रत्येक दिन योगा, क्विज, समाचार वाचन बच्चों के लिए आकर्षण का केन्द्र है।

2. विद्यालय में शैक्षणिक माहौल को जीवंत करने के लिए मैंने एक नयी शुरुआत की, जो सरकारी विद्यालयों की अवधारणा

3. नहीं थी, भ्वनेम की अवधारणा लाना। हमारे विद्यालय में सभी तरह की गतिविधियॉ भ्वनेमूपेम होने के, बच्चों में अनुषासन, प्रतिस्पर्घा, संगठनात्मक की सोच का उदय हुआ। बच्चों में खुद आगे बढ़ने और अपने भ्वनेम को आगे बढ़ाने की ललक में उनमें आत्मविष्वास और एक सीखने की चाह का सृजन हुआ। आज यह भ्वनेम की अवधारणा केवल रंग का प्रतीक नहीं रह गया है, बल्कि यह बच्चों की सीखने की चाह का सकारात्मक प्रतीक बन गया है।

।बजपअपजल जव म्दींदबम स्मंतदपदह ब्वउचमजमदबपमे

लर्निंग आउटकम' की प्राप्ति के लिए कई प्रक्रियाओं को पठन–पाठन से संबंद्ध किया गया :

1. ब्सूंपेम –ैनइरमबजूपेम स्मंतदपदह वनजबवउम को ।बीपमअम करने का प्रयासरत्त में ज्ण्ण्डण और थ्ण्ण्छण का प्रयोग के द्वारा बच्चे आनन्दपूर्वक सीखने लगे।
2. च्ठस् जिसके द्वारा बच्चे खुद करके सीखें। परिणाम यह मिला कि आज बच्चे विषय–वस्तु को प्रोजेक्ट द्वारा खुद विष्लेषणात्मक और तार्किक क्षमता के साथ सीख रहे है। इसके लिए षिक्षा चौपाल के आयोजन द्वारा अभिभावकों को जागृत किया।
3. टपेपज चतवरमबज के तहत् बच्चों को कभी बैंक, डाकघर, छोटे–छोटे कारखाना, खेत दिखाया जाता है, जहॉ बच्चे कर्मचारी, किसानों आदि के साथ स्वयं पूछताछ और चर्चा कर विषय को समझते है।
4. साथ ही समय–समय पर ैबपमदबम म्गीपइपजपवद के तहत् बच्चों द्वारा अपनी विज्ञान विषय की समझ प्रस्तुत करने का मौका मिल रहा है।
5. त्मंकपदह ब्ंउचंपहद का प्रभाव यह है कि बच्चें आज त्मंकपदह के साथ–साथ अपनी अभिव्यक्ति को प्रस्तुत करने में सक्षम होने लगे है। साथ ही प्रतिदिन बेसिक गणित एवम् भाषा की समझ को विकसित करने में अपनी समझ बना रहे हैं।
6. प्रतिदिन चेतना सत्र का एक विषिष्ट विषय होता है, जैसे बुधवार को पोषण स्वास्थ्य पर चर्चा, किसी दिन विज्ञान की उपलब्धि पर, आपदा प्रबंधन चर्चा, बैगलेस शनिवार के तहत् सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका आदि द्वारा चेतना सत्र को सषक्त किया जा रहा है।

7. ण्ब्ज् स्इ को व्यवस्थित कर कम्प्यूटर की कक्षा का संचालन कर बच्चों को ैउंतज ब्सें के माध्यम से सीखने का मौका मिला। बच्चों के पठन–पाठन हेतु ज्प्स्ण्डण् एवम् थ्स्ण्छण् कीट की व्यवस्था कर सुगमता से षिक्षण कार्य को करने योग्य किया गया।

8. बाल संसद, मीना मंच एवम् म्बव ब्सनइ के सदस्यों के साथ नियमित रुप से बैठक कर बच्चों में नेतृत्व की क्षमता का विकास किया जा रहा है।

9. खेलकूद के आयोजन द्वारा बच्चों में शारीरिक एवम् मानसिक विकास किया जा रहा है, जिसमें हाउस के आधार पर प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है।

10. पढ़ाई के साथ–साथ विद्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन कराया जाता है, जिसमें बच्चे आनंदपूर्वक भाग लेते है।

प्उचंबज व ि स्मंतदपदह म्दींदबमउमदज ।बजपअपजपमे

1 षैक्षिक उत्साह और अभिरुचि में वृद्धि।
2 समय प्रबंधन और आत्म–नियंत्रण में सुधार।
3 रचनात्मक और आलोचनात्मक सोच का विकास।
4 पाठ्यक्रम से बाहर जाकर नई जानकारी का अन्वेषण करने की कला में विकास।
5 जीवन कौषल एवं व्यक्तिगत विकास।समूह कार्य एवं त्मंकपदह बंउचंपहद से सामूहिक संवाद कौषल का विकास।
6 कौषल–आधारित षिक्षा की दिषा में वृद्धि।
7 स्वतंत्र सोच और आत्मनिर्भरता का विकास।
8 नवाचार एवम् समाधान केंद्रित सोच का विकास।
9 ग्रामीणों एवम् अभिभावकों का विद्यालय के प्रति विष्वास और सहयोग में सफलता।

डपककसम ैबीववस ेपवचनत ंज । ळसंदबम

सभी के सहयोग से बच्चों का शैक्षणिक विकास के साथ–साथ विभिन्न क्षेत्रों में क्रियाषीलता बढ़ी है, इसी आत्मविष्वास और सफलता के साथ बच्चों के सुनहरे भविष्य हेतु कर्मठतापूर्वक प्रयासरत् रहने का संकल्प है।